पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2025
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी–054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–033 : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम	30.09.2025	31.03.2026

***नोट : कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से

संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.–053
अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–053
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–053/टीएमए/2025
अधिकतम अंक : 100

---

1. भाषा की प्रकृति और स्वरूप की विस्तृत चर्चा कीजिए। 10

2. भाषा प्रयुक्ति से आपका क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित समझाइए। 10

3. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के महत्व को रेखांकित कीजिए। 10

4. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी/अंग्रेजी पर्याय लिखिए : 10
amplifier, epiderm, angle, deploy, sundry, संकेतक, विलयन, स्थानापन्न, जमापत्र, बीजक

5. नीचे दिए गए प्रश्न–पत्र का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

QUESTION PAPER : HISTORY
ANCIENT AND MEDIEVAL SOCIETIES

Time : 3 hours Maximum Marks : 100

Note: Answer any five questions in about 500 words each. Attempt at least two questions from each section. All questions carry equal marks.

SECTION–I

1. Examine the main features of the institution of slavery in ancient Greece. 20
2. Write a brief note on the essential features of Inca Civilization. 20
3. Write a note on the growth of pastoral nomadism. 20
4. Trace the process of urbanization in the Bronze age Civilizations. 20
5. Write short notes on **any two** of the following in about 250 words each : 10+10
   (a) Role of Language in human development
   (b) The Pyramids
   (c) Christianity in the Roman Empire
   (d) Mangol Empires

SECTION–II

6. Write an essay on new advances and developments in the field of science and technology in medieval Europe. 20
7. How did technological development change the warfare in medieval period? 20
8. Critically examine the term 'feudal revolution'. 20
9. Discuss the process of Portuguese consolidation in India Ocean and its impact on Indian Overseas trade. 20
10. Write short notes on **any two** of the following in about 250 words each : 10+10
    (a) Manors
    (b) Armenian merchants
    (c) Development of Printing
    (d) Calvinism

6. निम्नलिखित में से प्रत्येक उपसर्ग का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए। 5
उप–, कु–, अ–, निः–, अति–, अनु–

7. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रत्यय का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए। 5
–आई, –आन, –ता, –ई, –आलू

8. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

A) The government has given itself a 90-day breather to implement transparency provisions under the Lokpal law and has set September 15 as the deadline for government servants to file their assets and liabilities declaration.

Under the Lokpal law, all government servants irrespective of their rank will have to declare their assets and liabilities every year.

The assets declarations for central government employees will be put in public domain.

Government sources said orders were issued for giving officials some more time since conduct rules for different services and ranks were yet to be finalized in the light of the suggestions received from various cadre controlling authorities.

On its part, the Department of Personnel and Training (DoPT) has laid down the process and finalized the ground rules to be followed by public servants in this regard.

The Lokpal and Lokayukta Act 2013 had made it mandatory for every public servant to make the annual declaration and not just senior officials, as required under existing provisions.

Under rules notified by DoPT last week, the competent authority would have discretion to exempt public servants from declaring assets valued at less than four months' basic salary or Rs. 2 lakhs.

Government officials said the exemption clause had been incorporated so that the exercise to improve transparency did not end up harassing public servants.

The DoPT also has adapted declaration forms for assets and liabilities filed by candidates in Lok Sabha and assembly elections to enlarge the scope of the forms.

'The original version of the forms left room for officials to provide vague information or skip certain information. This would not be possible in the new formats,' a government official said, pointing to provisions that require officials to declare the weight and value of jewellery owned by them, spouse and dependents.

The practice of government officials declaring their assets – and information about their immovable assets being made public – is only a couple of years old.

B) Loni and Mandoli situated on the out-skirts of Delhi are at great risk of being permanently damaged by toxins released from e-waste, a city-based environmental organization has found.

According to the Toxic Link's report 'Impact of E-waste Recycling on Water and Soil', toxic elements like mercury, lead and zinc along with acids and chemicals released during e-waste recycling are contaminating soil and water in the surrounding areas of Delhi.

After laboratory testing of soil and water samples, the report found water and soil contaminated with heavy metals and other contaminants. Both Loni and Mandoli have multiple recycling units engaged in hazardous processes for recovery of materials from e-waste.

"It was found that both sites discharge their effluents into open lands in the absence of drains. They also dispose of their solid waste in open lands, while most residual matter is disposed by open burning causing severe damage to the environment," Programme Coordinator of Toxics Link, Prashant Rajankar said.

Drinking water contains exorbitant amount of toxic metal at both the locations. At Loni, some samples of water reveal mercury level as high as 20 times the prescribed limit. The level of zinc in a sample was 174 times higher at Mandoli.

"Increased amount of toxic elements are clear indicator that water at both the places is not fit for drinking. Toxic metals such as lead and zinc slowly damage vital organs and reduce the IQs and understanding capabilities of children," Rajankar said.

Similarly, soil samples suggest that the soil characteristics have changed significantly. The findings also show lead level in soil at Loni to be very high, with one sample as high as 147 times the prescribed limit. At Mandoli, lead level in one of the samples is 102 times higher than the prescribed limit.

9. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

क) हमारे देश में अनियोजित शहरीकरण हुआ है। शहरीकरण के नाम पर नियम–कानूनों के खुले उल्लंघन की इजाजत दी जाती है। अतिक्रमण, अवैध निर्माण और अनधिकृत कॉलोनियों का विकास इसकी जीती–जागती मिसाल है। लगभग हर शहर में ऐसी अनधिकृत कॉलोनियाँ उभर आई हैं जो भ्रष्ट अफसरों और वोट के लिए चिंतित राजनेताओं की मिलीभगत की देन है। कई बार तो ऐसी रिहायशी कॉलोनियों में छोटे–छोटे बाजार भी बन जाते हैं या फिर संकरी सड़कों पर दुकानें खुल जाती हैं जो अक्सर दुर्घटना का कारण बनती हैं। जब कभी अवैध कॉलोनियों के खिलाफ प्रशासनिक सख्ती की नौबत आती है तो एक किस्म का जनांदोलन खड़ा हो जाता है, जिसे पूरा राजनीतिक संरक्षण मिलता है। जनता का यही दबाव कॉलोनियों को नियमित करने का आधार बनता है। न्यायपालिका ने न जाने कितनी बार अवैध कॉलोनियों के निर्माण पर सरकारों को फटकार लगाई, लेकिन आम आदमी के हितों का हवाला देकर उनकी अनदेखी ही करना उचित समझा गया। इस चिंताजनक सिलसिले को समाप्त होना ही चाहिए। यह विचित्र है कि एक ओर हम भारत को विकसित देश बनाने की कल्पना करते हैं तथा दूसरी ओर नियम–कानूनों के उल्लंघन के कारण समाज में अराजक स्थितियाँ भी उत्पन्न करते जा रहे हैं। वास्तव में नियम–कानूनों के साथ अनुशासन को एक सामाजिक संस्कार के रूप में अपनाकर ही हम एक सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं।

(ख) भाषा, व्यक्ति के भावों–विचारों को मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। यह समाज में प्रतिफलित होती है। भाषाविज्ञान का संबंध भाषा से है और वह भाषा को दो दृष्टियों से देखता है। एक दृष्टि शुद्ध भाषाविज्ञान से संबंधित है जो यह बताती है कि भाषा क्या है, उसकी व्याकरणिक व्यवस्था कैसी है और भाषा–संरचना संबंधी उसके नियम क्या हैं, उसकी क्षमता क्या है। इस दृष्टि का आधार यह है कि भाषा समाज में प्रतिफलित होने पर भी सामाजिक संदर्भों से मुक्त है। यह वस्तुतः विशुद्ध रूप से भाषा के रचना प्रकार से संबंधित है। जबकि भाषाविज्ञान में भाषा को देखने संबंधी दूसरी दृष्टि का आधार भाषा का व्यावहारिक पक्ष है। समाजभाषाविज्ञान के नाम से परिचित भाषाविज्ञान की इस उपशाखा के अनुसार भाषा को अपने समस्या वैविध्य में देखने का प्रयास किया है। समाजभाषाविज्ञान में यह माना जाता है कि भाषा के विभिन्न रूपों का प्रादुर्भाव जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार होता हे। भाषा के ये विभिन्न रूप वस्तुतः भाषा के यथार्थ एवं वास्तविक रूप हैं। भाषा–प्रयुक्ति का संबंध भाषाविज्ञान की इसी दृष्टि से है। इस दृष्टिकोण से यह बोध होता है कि भाषा किन प्रयोजनों को साधती है, भाषा–प्रयोक्ता भाषा से क्या काम लेते हैं। विविध स्थितियों एवं विषयों में भाषा–व्यवहार की एक निश्चित परिपाटी होती है, जो समान रूप से स्वीकृत होती है। व्यक्ति अपने व्यवहार में जाने–अनजाने इस निश्चित परिपाटी का पालन करता है। इसी के आधार पर जीवन के विविध क्षेत्रों में भाषा के विशिष्ट अथवा व्यवहार क्षेत्र बनते हैं। इन्हीं प्रयोगों अथवा व्यवहार–क्षेत्रों से भाषा में प्रयुक्ति की संकल्पना का उद्‌भव हुआ।

*****